आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 27 March, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *आज के दिन बहुत महान है, उसे सिर्फ याद नहीं करना इस दिन के याद को स्वयं में समाना है*

सत्ताइस मार्च एक श्रेष्ठ योगी तपस्वी त्यागी सादगी से सम्पूर्ण महान आत्मा **दादी जानकी जी का स्मृति दिवस।**

जो ब्रह्माकुमारीज़ का चीफ रही है। जिन्होंने देश विदेश में बाबा के नाम का झंडा लहराया। अनेकों को भगवान से जोड़ा। विदेश सेवाओं में जिनका नाम अविस्मरणीय है।

वो इंग्लिश नहीं जानती थीं। ज्यादा पढ़ी-लिखी भी नहीं थी। लेकिन उनके **श्रेष्ठ वायब्रेशन्स** को अनुभव करके, उनके दृष्टि पाकर अनेक विदेशी भगवान के संतान बन गये।

उन्होंने अपने जीवन को त्याग, तपस्या और सात्विकता से भर लिया। वण्डरफुल बात है। दादी ने बहुत सहज विधि अपनाई। तीन दिन का कोर्स कराया। और उन्हें सीधा भेज दिया मधुबन।

" बाकी ख़ोज वहाँ जाकर करो "

आ जाते थे लोग। और यहाँ आकर बस उनपर पक्के ब्राह्मण होने का स्टाम्प लग जाता था।

ऐसी महान आत्मा जो सचमुच अलौकिक रूप से दिव्य बुद्धि सम्पन्न थी। प्रशासन की कला में भी बहुत ही निपुण थी। और यज्ञ के प्रति बहुत वफ़ादार।

बहुत केयर रखती थी। जो यज्ञ की कुछ भी इधर-उधर ज़रा सा भी नुकसान होने नहीं देती। देखती नहीं बल्कि सावधान करती थी। ऐसी ही यज्ञस्नेही, प्रभु प्रेम में मगन रहने वाली, ऐसी महान तपस्वी, जिन्हें अपने लिए संसार में कुछ भी नहीं चाहिए।

जो अपनी महिमा और मान भी नहीं सुनना चाहती थी। कोई बार ऐसा हुआ जो स्टेज में को-अर्डिनेटर उसकी महिमा करती तो उन्हें रोक देती थी।

" नहीं, बस बहुत हो गया .. बाबा की महिमा करो "

ऐसी महान आत्मा जिन्हें अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए। जो निष्काम भाव से संसार में रहते हो। जिन्होंने अपना सर्वस्व प्रभु पर समर्पित कर दी हो। ऐसी महान आत्माओं पर भगवान भी बहुत प्रसन्न रह।

और वहीं इस संसार की दशा को बदलने में सफल होते है। कितनों को उन्होंने जीवन दान दिया होगा। कितनों के जीवन को समर्पित कराया भगवान के इस महान कार्य में।

कितनों को जीना सिखाया। कितनों को त्याग और तपस्या सिखाई। बड़ा पुण्य जमा होता है इससे। ऐसी महान आत्मा, पुण्य आत्मा थी दादी जी।

जिनको सौ साल की लगभग की आयु में कई कष्टों से गुज़रना पड़ा चार-पाँच साल। लेकिन शारीरिक बीमारियों का प्रभाव उनके तपस्या पर, उनके व्यवहार पर, उनके ईश्वरीय प्रेम पर नहीं पड़ती थी।

जो लोग उनसे मिलने आते थे उनको भी नहीं दिखाई देता था। अच्छी तरह से मिलती थी। सबको टोली देती थी। बहुत कुछ ज्ञान की बातें सुनाती बी थी।

यह मनोबल का प्रतीक है। ऐसी महान आत्मा, महान मनोबल से सम्पन्न, शिवशक्ति, जिनकी यादगार में, शान्तिबन में शक्तिस्तम्भ बन गया है।

सचमुच सभी को शक्ति देने वाली है। शान्तिबन तो शक्तिपीठ बन गया है। तीन महान शक्तिपीठ वहाँ स्थापित हो गया है। जहाँ पर बैठकर सब तपस्या करते है।

तो ऐसी महान आत्मा को आज के दिन शत-शत नमन। ऐसी महान आत्माओं के सिर्फ गुणगान नहीं करना। उनसे कुछ सीखना भी पड़ता है।

पहले से ही वो जब मधुबन में रहती थी, तो रोज किचेन में आती थी। पन्द्रह मिनट सभी किचेन वालों को क्लास कराती थी।

तो ऐसी ज्ञान रत्नों की चैतन्य मूर्ति, योगी, परम तपस्विनी दादी जी को आज सभी याद कर रहे है। और याद करने का अर्थ है उन जैसे अपने जीवन को बनाना।

सभी भाई बहनों को उनका जीवन प्रेरणा देता रहता है। और आज सभी उन जैसे जीवन बनाने का संकल्प करे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org